14 'भारतीय संस्कृति और राष्ट्र' निबंध का मूल भाव सविस्तार बताइए ।

20

15 निम्नांकित विषयों पर टिप्पणी लिखिए :

(अ) 'प्रणाम' का मूल भाव

(ब) आचार्य शुक्ल का हिन्दी निबंध को योगदान

10+10=**20**

---

https://www.uokonline.com
Whatsapp @ 9300930012
Send your old paper & get 10/-
अपने पुराने पेपर्स भेजे और 10 रुपये पायें,
Paytm or Google Pay से

UB-6252

B. A. B. Ed. - III Year Examination, 2021

हिन्दी साहित्य

Paper - II

नाटक और निबंध

Time allowed : **Three Hours**

Maximum Marks : **100**

This question paper contains ***three*** *sections as under :*

https://www.uokonline.com

खण्ड–अ Max. Marks-10

:ns one compulsory question
wer of each part should not
! questions carry equal marks.
f प्रश्न है जिसमें 10 भाग है । प्रत्येक
/ से अधिक न हों । सभी प्रश्नों के

खण्ड–ब Max. Marks-50

:ns 10 questions. Attempt 5
:cting one question from each
h question should not exceed
stions carry equal marks.
। प्रत्येक इकाई से एक प्रश्न का चयन
/ के उत्तर दीजिये । प्रत्येक प्रश्न का
क न हो । सभी प्रश्नों के अंक समान

खण्ड–स Max. Marks-40

s 4 questions (questions may
This section covering all units
one question from each unit.
tions (500 words each). All
al marks.
ाश्न के भाग हो सकते है । इस खण्ड
ाम एक प्रश्न होगा । कुल दो प्रश्नों
प्रश्न का उत्तर 500 शब्दों से अधिक
ांक समान हैं।

[Contd...

खण्ड – अ

1 सभी प्रश्न करने अनिवार्य है :

(i) भारतेन्दु जी द्वारा रचित किन्हीं दो मौलिक नाटकों के नाम लिखिए ।

(ii) 'ध्रुवस्वामिनी' में किस समस्या को चित्रित किया गया है ?

(iii) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबंधों का संकलन किस नाम से जाना जाता है ?

(iv) 'प्रणाम' में महादेवी जी द्वारा किसे याद किया गया है ?

(v) 'सौन्दर्यबोध और शिवत्वबोध' निबंध के लेखक का नाम बताइए ।

(vi) 'तुम चंदन हम पानी' किसका निबंध संग्रह है ?

(vii) जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित किन्हीं दो नाटकों के नाम लिखिए ।

(viii) हिन्दी का पहला अभिनीत नाटक कौन सा है ?

(ix) रंगमंच गद्य की कौन सी विद्या का महत्वपूर्ण तत्व है ?

(x) निबंध के विभिन्न प्रकारों का उल्लेख कीजिए ।

$1 \times 10 = 10$

https://www.uokonline.com

खण्ड – ब

इकाई – I

निम्नांकित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

2 हमारा सृष्टि संहारकारक भगवान तमोगुण जी से जन्म है । चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन है । पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्र में हमारा निवास है । हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेजा हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं । हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक, जो लोक में अज्ञान और अँधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं । सुनते हैं कि भारतवर्ष में भेजने को मुझे मेरे परम पूज्य मित्र दुर्दैव महाराज ने आज बुलाया है । चलें देखें क्या कहते हैं (आगे बढ़कर) महाराज की जय हो, कहिए क्या अनुमति है ?

10

3 भूल है–भ्रम है । (ठहरकर) किन्तु उसका कारण भी है । पराधीनता की एक परंपरा सी उनकी नस–नस में उनकी चेतना में न जाने किस युग में घुस गई थी । उन्हें समझकर भी भूल करनी पड़ती है । क्या वह मेरी भूल न थी – जब मुझे निर्वासित किया गया, तब मैं आत्म–मर्यादा के लिए कितनी तड़प रही थी और राजाधिराज रामगुप्त के चरणों में रक्षा के लिए गिरी; पर कोई उपाय चला ? नहीं, पुरुष की प्रभुता का जाल मुझे अपने निर्दिष्ट पथ पर ले ही आया ।

10

इकाई – II

निम्नांकित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

4 काल के परिवर्तन की कैसी महिमा है जो अपने साथ ही साथ मानुषी प्रकृति के परिवर्तन पर भी बहुत कुछ असर पैदा कर देता है । वाल्मीकि ने जिन बातों को अवगुण समझ अपनी कल्पना के प्रधान नायक रामचन्द्र में बरकाया था, वे ही सब व्यास के समय में गुण हो गयीं, जिनकी कविता का मुख्य लक्ष्य यही था कि अपना मान, अपना गौरव, अपना प्रभुत्व जहाँ तक हो सके, न जाने पावे । भारत के हर एक प्रसंग का तोड़ अन्त में इसी बात पर है ।

10

अथवा

5 'जिस व्यक्ति या वस्तु पर प्रभाव डालने के लिए वीरता दिखाई जाती है, उसकी और उन्मुख कर्म होता है और कर्म की ओर उन्मुख उत्साह नामक भाव होता है । सारांश यह है कि किसी वस्तु के साथ उत्साह का सीधा लगाव नहीं होता । समुद्र लांघने के लिए जिस उत्साह के साथ हनुमान उठे हैं, उसका कारण समुद्र नहीं, समुद्र लांघने का विकट कर्म है ।'

10

https://www.uokonline.com

इकाई – III

निम्नांकित अवतरण की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

6 'रस भी अर्थ है. भाव भी अर्थ है, परन्तु ताण्डव ऐसा नाच है जिसमें रस भी नहीं. भाव भी नहीं । नाचने वाले का कोई उद्देश्य नहीं. मतलब नहीं, अर्थ नहीं । केवल जड़ता के दुर्वार आकर्षण को छिन्न करके एकमात्र चैतन्य की अनुभूति का उल्लास । यह 'एकमात्र' लक्ष्य ही छंद भरता है. इसी से उसमें ताल पर नियंत्रण बना रहता है । एकाग्री भाव छंद की आत्मा है । अगर यह न होता तो शिव का ताण्डव बेमेल धमाचौकड़ी और लस्टम–पस्टम उछल–कूद के सिवा और कुछ न होता ।'

10

अथवा

7 मगर वज़न चाहिए । आप समझे नहीं । जैसे आपकी यह सुंदर वीणा है, इसका भी वज़न भोलाराम की दरखास्त पर रखा जा सकता है । मेरी लड़की गाना–बजाना सीखती है । यह मैं उसे दूंगा । साधुओं की वीणा तो पवित्र होती है । लड़की जल्दी संगीत सीख गई तो उसकी शादी भी हो जायेगी ।

10

इकाई – IV

8 हिन्दी नाटक के विकास में जयशंकर प्रसाद के योगदान पर प्रकाश डालिए ।

10

अथवा

9 हिन्दी निबंध के उद्‌भव व विकास पर लेख लिखिए ।

10

इकाई – V

10 हिन्दी नाटक व रंगमंच के सम्बन्ध को सविस्तार बताइए ।

10

अथवा

11 निबंध की विभिन्न शैलियों का वर्णन कीजिए ।

10

खण्ड – स

12 नाटक के तत्वों के आधार पर 'भारत–दुर्दशा' नाटक की तात्विक समीक्षा कीजिए ।

20

13 'हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का हिन्दी निबंधों को योगदान' विषय पर लेख लिखिए ।

20

https://www.uokonline.com